• व्रत...

तीज पर क्या करें और क्या नहीं...

हरतालिका तीज का व्रत सुहागन स्त्रियां अपने पति की लंबी उम्र के लिए करती हैं, कुंवारी कन्याएं इस व्रत को अच्छे पति को प्राप्त करने के लिए करती हैं और विधवा महिलाएं इस व्रत को अगले जन्म में अच्छे पति की कामना से करती हैं।

▶ हरतालिका तीज के दिन भगवान गणेश, शिव जी और माता पार्वती की प्रतिमा रेत से ही बनाकर पूजन करें। ऐसा करने से आपको हरतालिका तीज के व्रत का पूर्ण फल प्राप्त होगा। सुबह पूजन करने के समय हरतालिका तीज की कथा सुननी चाहिए। उसके बाद शाम के समय आपको चार पहरों की पूजा करनी चाहिए। तीज पर 16 श्रृंगार को अधिक महत्व दिया है। इसलिए इस दिन महिलाओं को सभी 16 श्रृंगार अवश्य करने चाहिए। इस दिन शादीशुदा युवतियां अपने मायके में झूला अवश्य झूलती हैं। इसलिए अपने मायके में झूला अवश्य झूलें। माना जाता है कि हरतालिका के दिन झूला-झूलने से पति और पत्नी में प्रेम बढ़ता है। यह व्रत सुहागन महिलाओं, कुंवारी कन्याओं के साथ- साथ विधवा स्त्रियां भी रख सकती हैं। इसलिए

इस व्रत को अधिक महत्व दिया जाता है।

▶ तीज के दिन हरी चीजों को अधिक महत्व दिया जाता है। मेंहदी को सुहाग का प्रतीक माना जाता है। मेहंदी में शीतलता होती है। इसलिए हरतालिका तीज के दिन महिलाओं को मेहंदी अवश्य लगानी चाहिए। तीज के दिन अपनी सास को उपहार अवश्य भेजें जिसमें सभी प्रकार के श्रृंगार का सामान अवश्य होना चाहिए। ऐसा करने से आपको आपकी सास का आर्शीवाद प्राप्त होगा। हरतालिका तीज के दिन पूजा के बाद लाल मिट्टी से स्नान अवश्य करें। माना जाता है कि लाल मिट्टी से स्नान करने से पूरा शरीर पवित्र हो जाता है। हरतालिका तीज के दिन अपने पति का आर्शीवाद लें क्योंकि पति के आर्शीवाद के बिना यह व्रत अधूरा माना जाता है।

▶ तीज के दिन शक्कर का सेवन बिल्कुल भी न करें। क्योंकि इस दिन शक्कर का सेवन वर्जित होता है। व्रत रखने वाली महिला अगर रात के समय में सो जाती है तो वह अगले जन्म में अजगर को रूप में जन्म लेती है। इसलिए इस दिन व्रत रखने वाली महिला को रात के समय सोना नहीं चाहिए। सारी रात जागकर माता पार्वती और भगवान शिव का जागरण करना चाहिए।

• पूजा...

अजा एकादशी...

भाद्रपद मास की एकादशी को अजा एकादशी कहते हैं। इस बार अजा एकादशी 15 अगस्त ,शनिवार को पड़ रही है। हिंदू धर्म मान्यताओं के अनुसार, इस व्रत को रखने से अश्वमेध यज्ञ के बराबर पुण्य मिलता है। अजा एकादशी के दिन भगवान विष्णु की पूजा की जाती है। ऐसा कहा जाता है कि इस व्रत को रखने से सभी पापों से मुक्ति मिल जाती है और मनोकामनाएं पूरी होती है। इसलिए सनातन धर्म में एकादशी का उपवास श्रेष्ठ माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार, अजा एकादशी व्रत के कुछ नियम है जिनका पालन करना जरूरी होता है।

एकादशी तिथि आरंभ- 14 अगस्त 2020 दोपहर 2 बजकर 1 मिनट से।

समापन-15 अगस्त 2020 रात 2 बजकर 20 मिनट पर।

अजा एकादशी व्रत विधि: अजा एकादशी का व्रत कठिन माना जाता है। इस दिन किसी भी तरह के अनाज का सेवन नहीं किया जाता है। निर्जला या एक समय फलाहार करके ही अजा एकादशी का व्रत रखते हैं। मान्यता है कि व्रत रखने वाले को एकादशी की रात में सोना नहीं चाहिए और रात में श्रीहरि का ध्यान लगाना चाहिए।

अजा एकादशी पर कैसे करें पूजा: अजा एकादशी का व्रत रखने वाले को सुबह उठकर स्नान से निवृत्त होकर सबसे पहले व्रत का संकल्प लेना चाहिए। इसके बाद भगवान विष्णु की प्रतिमा पुष्प, धूप, वस्त्र आदि अर्पित करने के बाद आरती करनी चाहिए। भगवान विष्णु को तुलसी प्रिय है, इसलिए पूजा में तुलसी का पत्ता भी अर्पित करना चाहिए। अजा एकादशी के दिन गरीबों को दान देना चाहिए।

अजा एकादशी के दिन इन बातों का रखें ध्यान: शास्त्रों में एकादशी के दिन चावल खाने को वर्जित बताया गया है। मान्यता है कि एकादशी के दिन चावल खाने से व्यक्ति अगले जन्म में रेंगने वाले जीव की योनि में जन्म लेता है। इसलिए अजा एकादशी के दिन भी भूलकर भी चावल का सेवन नहीं करना चाहिए।

▶ एकादशी का व्रत श्रीहरि के प्रति समर्पण भाव दिखाता है। इसलिए अजा एकादशी के दिन खान-पान और बर्ताव में संयम का ध्यान रखना चाहिए।

▶ सभी तिथियों में एकादशी की तिथि को श्रेष्ठ माना जाता है। इसलिए एकादशी का लाभ पाने के लिए लड़ाई-झगड़े से बचना चाहिए।

हरितालिका तीज...

ऐसी मान्यता है कि भगवान शिव को पाने के लिए माता पार्वती ने इस व्रत को किया था। कुंवारी कन्याएं भी अच्छा पति पाने के लिए यह व्रत रखती है।

उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड और राजस्थान में खास तौर पर मनाया जाता है। यह व्रत सावन की हरियाली तीज से अलग है। यह एक ऐसा व्रत है जिसे सुहागिनों के अलावा कुंवारी कन्याएं भी रखती हैं...

हरितालिका तीज भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाई जाती है। इस साल हरितालिका तीज 21 अगस्त को पड़ रही है।

शास्त्रों के अनुसार, हरितालिका तीज को सबसे बड़ी तीज माना जाता है। हरितालिका तीज से पहले हरियाली और कजरी तीज मनाई जाती हैं। इस दिन सुहागिन महिलाएं अपनी पति की लंबी आयु के लिए व्रत रखती है। ऐसी मान्यता है कि भगवान शिव को पाने के लिए माता पार्वती ने इस व्रत को किया था। कुंवारी कन्याएं भी अच्छा पति पाने के लिए यह व्रत रखती है। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड और राजस्थान में खास तौर पर मनाया जाता है। यह व्रत सावन की हरियाली तीज से अलग है।यह एक ऐसा व्रत है जिसे सुहागिनों के अलावा कुंवारी कन्याएं भी रखती हैं। हरितालिका तीज में भगवान शिव और माता पार्वती की विधि-विधान से पूजा की जाती है।

हरितालिका तीज पूजा मुहूर्त- सुबह 5 बजकर 54 मिनट से सुबह 8:30 मिनट तक।

शाम को हरितालिका तीज पूजा मुहूर्त- शाम 6 बजकर 54 मिनट से रात 9 बजकर 6 मिनट तक।

इस दिन विशेष रूप से गौरी-शंकर की पूजा की जाती है। व्रत करने वाली महिला सूर्योदय से पूर्व ही उठ जाती हैं और स्नान-ध्यान कर श्रृंगार करती हैं। एक कथा के अनुसार माता पार्वती ने भगवान शिव जी को पति के रूप मे पाने के लिए कठिन तपस्या की थी लेकिन उस समय पार्वती की सहेलियां ने उन्हें अगवा कर लिया था। उन्होंने हरतालिका शब्द की व्याख्या करते हुए बताया कि हरत का अर्थ होता है अगवा करना तथा अलिका का अर्थ होता है सहेलिओं द्वारा अपहरण करना। जिसे हरतालिका कहा जाता है।

इस दिन गौरी शंकर की विशेष पूजा की जाती है। दिन में कथा सुनने के बाद महिलाएं निर्जला रहकर पूरे दिन व्रत रखती हैं। अगले दिन सुबह ही व्रत खोला जाता है। पूजन के लिए गौरी-शंकर की मिट्टी की प्रतिमा बनाई जाती है। इसके साथ मां पार्वती को सुहाग का सारा सामान चढ़ाया जाता है। रात में भजन-कीर्तन करते हुए जागरण कर तीन बार आरती की जाती है।

हरितालिका तीज के मौके पर पूजे जाने वाले शिव-पार्वती एक ही विग्रह में होते हैं। साथ ही देवी पार्वती की गोद में भगवान गणेश भी विराजमान रहते हैं। गंगा मिट्टी से बने शिव-पार्वती के विग्रह को प्रतिष्ठित करने के लिए केले के खंभों से मंडप बनाया जाता है। तरह-तरह के सुगंधित पुष्पों से साज-सज्जा की जाती।

प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व ही जागकर नित्यकर्मों से निवृत्त होने के बाद पूरे आस्था के साथ इस व्रत का संकल्प लेना चाहिए। इसके बाद पूजा की तैयारी करें और मांपार्वती का ध्यान करें। पूजन के दौरान मन्त्रों में विशेषकर- ***ऊं पार्वत्यै शान्ति स्वरूपिण्यै शिवायै नमः*** इस मन्त्र से गौरी का और ***ऊं महादेवाय नमः*** मन्त्र से भगवान शिव की स्तुति करते हुए उनकी स्थापना करें।

उसके बाद तन, मन और धन सामर्थ्य के अनुसार पूजा एवं दान करें। इससे अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति होती है। पूजा में गणेश जी को लड्डू का भोग अवश्य लगाएं। हरितालिका तीज के दिन कुंवारी कन्याओं को शीघ्र विवाह एवं मनोवांछित वर की प्राप्ति के लिए सौन्दर्यलहरी या पार्वती मंगल स्तोत्र का पाठ करना लाभदायक माना जाता है। पार्वती मंगल स्तोत्र का पाठ करने से पहले सुहागिन महिला, कुंआरी कन्या को अभीष्ट फल की प्राप्ति के लिए अपने गोत्र और नाम का उच्चारण कर, जल से संकल्प लेकर ही पाठ करना चाहिए। इस व्रत का विधान आध्यात्मिक और मानसिक शक्ति की प्राप्ति, चित्त और अन्तरात्मा की शुद्धि, संकल्प शक्ति की दृढ़ता, वातावरण की पवित्रता के लिए लाभकारी माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार इस व्रत के द्वारा व्रती अपने भौतिक एवं पारलौकिक संसार की व्यवस्था करता है।

इसके पूर्व या उत्तर मुख होकर हाथ में जल, चावल, सुपाड़ी पैसे और पुष्प लेकर इस मांगलिक व्रत का संकल्प लें। इस दिन यथासम्भव मौन रहने का प्रयास करें, इससे आन्तरिक शक्ति में वृद्धि होगी। व्रत करते हुए दिन में सोने (शयन) से परहेज करें। भगवान शिव की आराधना में धूप, दीप, गन्ध, चन्दन, चावल, विल्वपत्र, पुष्प, शहद, यज्ञोपवीत,धतूरा, कमलगट्टा,आक का फल या फूल का प्रयोग करें। पूजन के दौरान अगर सुहागिन स्त्रियां श्रृंगार की वस्तुएं और पीताम्बर रंग की चुनरी चढ़ायें तो उनकी मनोकामना पूर्ण होगी।

• आयु वृद्धि के लिए...

रवि प्रदोष व्रत...

प्रदोष व्रत की महत्वता सप्ताह के दिनों के अनुसार अलग-अलग होती है। रविवार को पड़ने वाले प्रदोष व्रत और पूजा से आयु वृद्धि तथा अच्छा स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया जा सकता है। रविवार को शिव-शक्ति पूजा करने से दाम्पत्य सुख भी बढ़ता है। इस दिन प्रदोष व्रत और पूजा करने से परेशानियां दूर होने लगती हैं। रवि प्रदोष का संयोग कई तरह के दोषों को दूर करता है। इस संयोग के प्रभाव से तरक्की मिलती है। इस व्रत को करने से परिवार हमेशा आरोग्य रहता है। साथ ही सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती है। व्रत करने के लिए त्रयोदशी के दिन सूर्य उदय से पूर्व उठना चाहिए। नित्यकर्मों से निवृत्त होकर भागवान शिव की उपासना करनी चाहिए। इस व्रत में आहार नहीं लिया जाता है। पूरे दिन का उपवास करने के बाद सूर्य अस्त से पहले स्नान कर सफेद वस्त्र धारण करने चाहिए। पूजन स्थल को गंगाजल और गाय के गोबर से लीपकर मंडप तैयार करना चाहिए। इस मंडप पर पांच रंगों से रंगोली बनानी चाहिए। पूजा करने के लिए कुश के आसन का प्रयोग करना चाहिए। पूजा की तैयारी करने के बाद उत्तर पूर्व दिशा की ओर मुख कर भगवान शिव की उपासना करनी चाहिए। पूजन में भगवान शिव के मंत्र 'ऊं नमः शिवाय' का जप करते हुए शिव जी का जल अभिषेक करना चाहिए।

• मिस्टिक नॉट...

मिस्टिक नॉट भाग्यवर्धक फेंगशुई सिम्बल है, ये परिवार में स्थित प्रेम, विश्वास और एकता का प्रतीक माना जाता है। मिस्टिक नॉट की मौजूदगी से परिवार में बंटवारे जैसी समस्या सामने नहीं आती, क्योंकि ये सिम्बल परिवार के सभी सदस्यों को एक डोर में बांधे रखता है। मिस्टिक नॉट सिम्बल के रहते किसी भी तरह की विघ्न-बाधा, रोग-पीड़ा घर में प्रवेश नहीं कर पाती। शादीशुदा जोड़े के बीच प्रेम बढ़ाना हो, तो मिस्टिक नॉट बेडरूम के दक्षिण-पश्चिम कोने में लगाएं। इससे उनके बीच सदैव प्यार बना रहता है।